Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

भारतीय सिनेमा तथा नारी : इतिहास व वर्तमान संदर्भ

('INDIAN CINEMA AND WOMEN : HISTORY AND CURRENT REFERENCE')

DR. SANJEEV KUMAR [1]

[1] ASSISTANT PROF IN HINDI, GOVT. COLLEGE BEETAN, DISTT UNA (HIMACHAL PRADESH)- 176601

ABSTRACT:

आदिकाल से ही मानव ने नारी शक्ति की पूजा की है। पुरूष एक ओर जहाँ कठोरता, शक्ति एवं शौर्य तथा सक्रियता का परिचायक है वहीं नारी कोमलता, मधुरता एवं सगुण का मूर्तरूप है। विश्व का सबसे पहला (लगभग 2500 वर्ष पहले) समाजशास्त्र, मनुस्मृति के अनुसार "यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमते तत्र देवता।" यह विचारधारा नारी की श्रेष्ठता की द्योतक है। यह स्पष्ट है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं, वहाँ सुख, समृद्धि और सद्गुणों का विकास होता है, और जहाँ स्त्री का सम्मान नहीं होता वहाँ तमाम श्रेष्ठ क्रियाएँ भी निष्फल होती हैं। देवता, किन्नर और गंधर्व इत्यादि भी नारी को शक्ति का पर्याय ही मानते आए हैं। नारी मातृ शक्ति के रूप में पूज्नीय रही है । गौरी के रूप में आदर्श पतिव्रता तथा सौंदर्य की देवी की भी कल्पना की गई है।

KEYWORDS:

भारतीय सिनेमा, नारी, इतिहास व वर्तमान

भारतीय सिनेमा में नारी की भूमिका को अगर ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो 1931 ई. में बनी पहली बोलती हिन्दी फिल्म 'आलम आरा' से लेकर वर्तमान समय तक बनी लगभग हर हिन्दी फिल्म में महिला किसी न किसी भूमिका में दिखाई देती है। शुरुआती दौर की सामाजिक फिल्मों में नायिकाओं का पहनावा सामाजिक होता था। परम्परागत जीवन संघर्ष चित्रित होता था । भारत की पहली फीचर फिल्म (1913 ई.) में 'राजा हरिश्चंद्र' एक धार्मिक फिल्म बनी। बोलती फिल्म 'आलम आरा ' 1931 ई. में ऐतिहासिक फिल्म बनी । लगभग बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक तक बनी हर फिल्म में नारी की भूमिका सराहनीय रही है। ये फिल्में धार्मिक, ऐतिहासिक, देशभक्ति, मनोरंजन प्रधान तथा तत्कालीन समय की सामाजिक बुराईयों को चित्रित करती थीं जिससे समाज में दर्शकों को एक सकारात्मक संदेश मिलता था।

1. वर्तमान में नारी का कार्य क्षेत्र : बीसवीं सदी के अंतिम दशक तक नारी घर की चारदीवारी के भीतर सहमी, सकुचायी, ठिठकी-ठिठकी, अपने सपनों को आँखों की पलकों पर चिपका कर ही रहती थी। भारतीय नारियाँ सदियों से करुणा, त्याग, कोमलता एवं प्रेम की मूर्ति समझी जाती रही हैं, परन्तु आज वही नारी घर की दहलीज को पार कर अपनी ज़मीन चाहे वह राजनीति हो या साहित्य, फिल्म हो या पत्रकारिता, व्यापार हो या समाज सेवा, खेल हो या विज्ञान, डॉक्टर, अभियन्ता, शिक्षक, पुलिस, वकालत, सेना, वायुसेना, खेल का मैदान, इंजीनियरिंग अर्थात् महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिखाया है।

2. भारतीय सिनेमा में नारी की सकारात्मक भूमिका : वैदिक काल में नारी का स्थान पुरुष समान ही नहीं बल्कि उससे श्रेष्ठ था। धर्मशास्त्रों में नारी को पुरुष की अर्धांगिनी तथा धर्मपत्नी कहा गया है। नारी ब्रह्मज्ञान की अधिकारिणी थी। समस्त धार्मिक कार्यों में उसका सहयोग अनिवार्य था। रामायण काल से ही लड़कियों को शिक्षित करने की परम्परा है। समाज के नैतिक मूल्यों, संस्कारों, मान्यताओं, मानसिकताओं और व्यवस्थाओं में परिवर्तन नारी के आस-पास घूमता है। स्वतंत्रता के 72 वर्षों में हुए सामाजिक परिवर्तन का महिलाओं पर अधिक असर हुआ है। एक समय था जब नारी घर की चारदीवारी के अन्दर रखने वाली वस्तु मानी जाती थी। परन्तु आज स्थिति पूर्णतः भिन्न है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर और कभी उनसे आगे भी निकल गई हैं। भारतीय सिनेमा में नारी न सिर्फ अभिनय के क्षेत्र में, बल्कि निर्माता निर्देशक, गीतकार, संगीतकार तथा विश्व सुन्दरी के साथ-साथ विदेशी सिनेमा में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर अपना, अपने राज्य, समाज तथा देश का नाम रोशन कर रही हैं।

3. फैशनपरस्त नारी और अंग प्रदर्शन : भारत की संस्कृति, पूरी दुनिया में एक विशेष बनी हुई है तथा इस विशेष में भारतीय नारियों द्वारा किया जाने वाला फैशन या श्रृंगार एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है।आधुनिक नारी में फैशन के प्रति जागरूकता तेज़ी से बढ़ रही है। अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाए रखना न केवल उसका शौक है, बल्कि दिन-प्रतिदिन एक अनिवार्यता भी बनती जा रही है। इसमें विभिन्न प्रकार के आभूषण, परिधान, मेहंदी, केश-सज्जा, पर्स तथा जूते इत्यादि तो मान्य हो सकते हैं परन्तु देह प्रदर्शन के दिनों-दिन बढ़ते चलन खासकर स्त्री देह ने पूरे परिदृश्य को बेहद खूबसूरती से दर्शनीय बना डाला है। महिलाएँ सदा नवीनता की चाह में अपनी शक्ल-सूरत बदलना पसन्द करती हैं। सुन्दर दिखने की लालसा हर मनुष्य में होती है, परन्तु महिलाओं में तो हमेशा इसकी होड़ लगी हुई दिखाई देती है ताकि लोग उन्हें पसन्द करें तथा उनकी ओर आकर्षित हों। फिल्म उद्योग हमेशा से ढेर सारे फैशन के साथ हमारी जिन्दगी में अपनी मौजूदगी दर्ज कराता आया है। आज फैशन में नारी उस अंग प्रदर्शन को प्राथमिकता देती है जो कुछ समय पूर्व तक मॉडलिंग का अंग माना जाता था । पहले तो केवल पुरुष ही नारी को भोग की वस्तु समझता था, लेकिन आज तो नारी स्वयं को भी भोग की वस्तु समझकर समाज में प्रस्तुत होने से पीछे नहीं हटती। सिनेमा ने तो नारी जीवन और स्वभाव का एकदम अस्वाभाविक और अतिरंजित रूप प्रस्तुत

कर यौन-उत्शृंखला, हिंसा, अपहरण, बलात्कार वाले सामाजिक विस्तार को विस्तारित किया है।

आधुनिक युग की उपभोक्तावादी संस्कृति में विज्ञापन के द्वारा उपभोक्ताओं को उत्पादक अपने उत्पाद के प्रति बड़ी कुशलता से आकर्षित करने में सफल हो रहे हैं। विज्ञापन आकर्षक बनाने के लिए सर्वाधिक प्रयोग नारियों का ही किया जाता है क्योंकि उत्तेजना और सनसनी फैलाने का सीधा और सरल माध्यम स्त्री को माना जाता है। सिगरेट तथा शराब आदि तक के विज्ञापनों में नारी के शरीर का भद्दा प्रदर्शन दिखाई देता है। विज्ञापन चाहे कोई भी हो नारी को कामुक बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। समाज ने नारी को विज्ञापन का माध्यम बनाकर रख दिया है। कुछ भी हो विज्ञापनों में नारी को सम्मानजनक निर्णायक स्थिति से अधिक दर्शाया जाने लगा है। सिनेमा सामाजिक जीवन का एक घूमता आईना होता है । रोजमर्रा की दुनिया का एक अभिन्न अंग है जिसके अस्तित्त्व को समाज का व्यक्ति समझता और पहचानता है। मगर मनोरंजन के साधनों द्वारा नारी को अप्रत्याशित रूप में दर्शाया जाए तो इसका प्रभाव भी अप्रत्याशित हो जाएगा।

4. भारतीय सिनेमा में नारी चित्रण : तेजी से बदलते समाज में मीडिया ने अपना जो वर्चस्व कायम किया है उससे सबसे अधिक प्रभावित हुई है स्त्री। आज़ादी के बाद जैसे-जैसे सामाजिक सरंचना में बदलाव आया, जीवन-स्थितियाँ बदलीं, वैसे-वैसे जीवन के मूल्यों में भी परिवर्तन आने लगे। आज सामाजिक मूल्यों में आए बदलाव के अनुकूल फिल्मों में हिंसा और अश्लीलता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। फिर चाहे 'सौतन की बेटी' हो, 'रिहाई' हो, 'बॉबी', 'एक दूजे के लिए' 'बाजीगर' 'अंजाम' या अन्य ऐसी सैंक़डों फिल्में हैं जिनका मुख्य केन्द्र प्रेम अर्थात् शृंगार, संयोग और वियोग रहा है। किसी भी फिल्म में शृंगारिक भाव लाने के लिए फिल्मकारों ने बरसात का सहारा लेकर नारी की देह को दर्शाने के अवसर तलाशने शुरु किए। बादलों की गड़गड़ाहट, भयतीत नायिका को नायक से लिपटने के लिए बाध्य कर देती है। वर्षा से भीगा हुआ मादक शरीर, गोरी देह से चिपकी हुई साड़ी और चोली, घुटनों के ऊपर तक साड़ी को उठाकर निचोड़ती हुई नायिका, गीली साड़ी के झीनेपन से झलकती हुई उसकी मांसल जाँघों और छाती तथा बालों से गालों पर टपकते हुए पानी से बचने की कोशिश करती हुई नायिका को हर फिल्म में दिखाना हर फिल्मकर अपना अधिकार मानने लगा है। 1931 ई. में बनी 'आलम आरा' से लेकर वर्तमान तक लगभग 30 भाषाओं में 90,000 के आसपास फिल्में बनाई जा चुकी हैं, परन्तु आज की फिल्मों के वर्ण्य विषय की तुलना अगर पिछले युगों से की जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि आज भारतीय सिनेमा की शायद ही कोई फिल्म ऐसी होगी जिसमें अश्लीलता का नंगा नाच न दर्शाया गया हो? जिस फिल्म में जितनी अधिक अश्लीलता परोसी जाती है, नग्न देह प्रदर्शित की जाती है वह फिल्म उतनी ही अधिक सफल मानी जाती है और अधिक कमाई करती है । ऐसी मानसिकता का परिणाम ही है कि आज फिल्म निर्माताओं तथा निर्देशकों में ऐसी अधिक से अधिक फिल्में निर्मित करने की होड़ सी लगी हुई है।

इतिहास साक्षी है कि विशेषकर धार्मिक और जातिगत विरोधों के कारण तथा जनता के भारी रोष के कारण कई हिन्दी फिल्मों पर प्रतिबंध लगाए जा चुके हैं। लेकिन आश्चर्य होता है कि जनता ने ऐसी किसी भी फिल्म का विरोध आज तक नहीं किया जिसमें नारी जाति का अपमान होता हो। फिल्मों में नारी को एक देह के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता है। फिल्म 'जैरीना' में 42 चुम्बन दृश्य थे। फिल्म 'कर्म' में खूब चुम्बन दृश्य थे तथा और भी बहुत सी हिन्दी फिल्मों में नारी देह का मनमाना प्रदर्शन आज तक किया जा रहा है। न तो समाज ने और न ही महिला संगठनों ने इस बात पर इतनी तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की कि किसी फिल्म का प्रदर्शन रोकना पड़ा हो। इसीलिए वर्तमान में यह प्रवृति धीरे-धीरे बढ़ती चली जा रही है। नारी रातों रात प्रसिद्धि और पैसे के लालच में अपनी सहमति देकर खुद को वस्तु होने के लिए तैयार कर लेती है। दैनिक जीवन में फिल्म उद्योग में घट रही नारी शोषण सम्बंधी सैंकडों घटनाएँ प्रमाण के रूप में हमें सुनने को मिलती हैं।

5. सिनेमा में बढ़ती अश्लीलता व दुष्प्रभाव : आज फिल्मों, दूरदर्शन कार्यक्रमों तथा गीतों में जिस ढ़ंग से नारी के शरीर को अभद्र तथा अश्लील ढंग से दिखाए जाने में वृद्धि हो रही है, दूरदर्शन चैनलों पर लगभग हर फिल्म में नारी का अश्लील प्रदर्शन हो रहा है, ऐसी स्थिति में परिवार के साथ बैठकर देखना मुश्किल हो गया है। नारी के उत्तेजित रूप को देखकर हर कोई लज्जित महसूस करता है। भारतीय सिनेमा, दूरदर्शन चैनल तथा विज्ञापन पर प्रदर्शित अश्लीलता का सर्वाधिक बुरा प्रभाव बच्चों तथा नई भारतीय युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है क्योंकि उसका सीधा प्रभाव दर्शकों के, विशेषकर युवाओं के चेतन अथवा अवचेतन मन पर पड़ता है। यही कारण है कि आज समाज में चारों ओर फिल्मी तर्ज पर चोरी, डकैती, अपहरण तथा बलात्कार की शर्मनाक घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। आज लड़कियों का आदर्श विश्व सुन्दरी बनने का है। मॉडल बनने में है । अधिक से अधिक पैसा कमाने में है। आइटम गर्ल बनकर गर्व का अनुभव करने में है।

6. अश्लीलता रोकने हेतु न्यायिक प्रावधान : नारी के अश्लील प्रदर्शन को रोकने के लिए अगस्त 1986 ई. में विधेयक पास किया गया जिसमें यह परिभाषित किया गया है कि किन परिस्थितियों में तथा किस प्रकार के चित्रण को अश्लील माना जाएगा। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 292, 293 और 294 में भी अश्लीलता विरोधी प्रावधान हैं। केन्द्रीय सरकार ने फिल्मों की दशा सुधारने के लिए समय-समय पर फिल्म निरीक्षण समितियों का गठन भी किया है। भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा स्थापित 'फिल्म प्रमाणन बोर्ड' (सेंसर बोर्ड) भी स्थापित किया गया है, परन्तु आज बाड़ ही खेत खाने लगी है। फिल्मों में अनावश्यक तथा अश्लील नारी चित्रों को आँख मूंद कर अनुमति दे दी जाती है। वर्तमान समय में भारतीय सिनेमा में दिन-प्रतिदिन बढ़ रही अश्लीलता को कारगर ढ़ंग से रोकने हेतु सख्त कानून बनाए जाने तथा उन्हें लागू किए जाने की आवश्यकता है ताकि प्राचीन एवं समृद्ध भारतीय संस्कृति की रक्षा की जा सके। नई युवा पीढ़ी जो कि कल की कर्णधार है उसे पथभ्रष्ट होने से रोका जा सके।

निष्कर्ष - यह विषय अत्यधिक चिंतनीय है कि आखिर नारी का यह व्यापारीकरण कहाँ तक उचित है? सिनेमा में अश्लीलता तथा विज्ञापनबाजी में नारी-शरीर के भद्दे चित्रण से आज भी नारी भोग-विलास का साधन मानी जा रही है। नारी का शो-पीस के रूप में प्रयोग एक सामाजिक प्राणी के नाते उसके महत्त्व और गौरव को चोट पहुंचाता है। इसी के साथ-साथ जब उसने मीडिया या सिनेमा में पदार्पण कर ही लिया है नारी को भी यह मानकर चलना चाहिए कि जब पिंजरे में

बंद पंछी पिंजरे की सलाखों से बाहर निकलता है तो जहां एक ओर असीमित आकाश उसकी उड़ान की प्रतीक्षा करता है वहीं कुछ परिंदे उसे दबोच लेने की ताक में भी रहते हैं। स्त्री को स्वयं ही तय करना है कि वह कैसे इनका मुकाबला करते हुए अपनी प्रतिभा व योग्यता को बनाए रखना है।

भारतीय सिनेमा समाज की प्रवृतियों तथा कुरीतियों को दिखाने का बेहतर माध्यम है, परन्तु अन्य विषयों को चुनकर और आधुनिक नारी की प्रगति सोच दिखाने के नाम पर आजकल के फिल्मकार स्त्री देह को एक वस्तु की तरह जिस ढ़ंग से दर्शकों के सामने पेश कर रहे हैं, यह अत्यंत निंदनीय है इसे समाज तथा नारी विरोधी ही कहा जाएगा। अगर भारतीय सिनेमा इसी तरह पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का अनुकरण करता रहा और भारतीय सिनेमा में चित्रित हो रही अश्लीलता पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया तो वह दिन दूर नहीं जिस दिन भारत अपनी सांस्कृतिक पहचान खो देगा ।

REFERENCES

1. औरतें और आवाजें, क्षमा शर्मा, आलेख प्रकाशन दिल्ली -32 ।

2. औरत अस्मिता और यथार्थ, ज्ञानेन्द्र रावत, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली ।

3. कंस समाज में औरत, ज्ञानेन्द्र रावत, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली ।

4. प्रगतिशील नारी, शान्ति कुमार स्याल, आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली।

5. मुझे जन्म दो माँ, संतोष श्रीवास्तव, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।

6. महिला सशक्तिकरण (दशा और दिशा), मनीष कुमार, मधुर बुक्स, दिल्ली।

7. इन्साइक्लोपीडिया।

शोधकर्ता :-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बीटन,
जिला -ऊना (हिमाचल प्रदेश)
दिनांक : 05 जून 2019